सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत संत गुरु घासीदास

डॉ. राजाराम बनर्जी
अविनाश बनर्जी

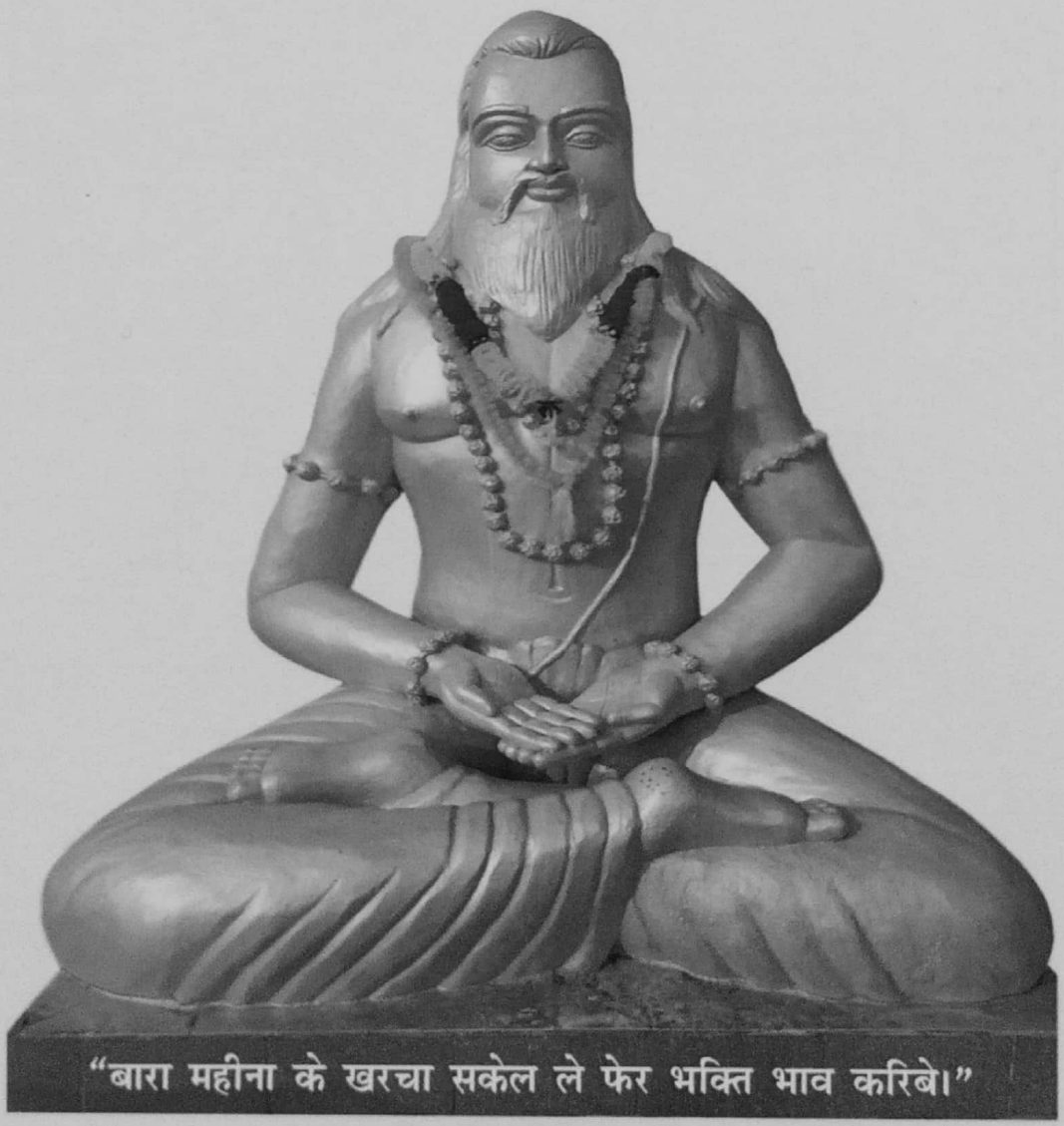

"बारा महीना के खरचा सकेल ले फेर भक्ति भाव करिबे।"

Scanned with CamScanner

स्वाक्षर प्रकाशन नई दिल्ली, कटिहार

सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत : गुरु घासीदास

© संपादक

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी रूप में चाहे इलैक्ट्रॉनिक अथवा मैकेनिक तकनीक से, फोटोकॉपी द्वारा या अन्य किसी प्रकार से पुनर्प्रकाशन अथवा पुनर्मुद्रण, प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

आईएसबीएन : 978-93-86007-90-2

प्रकाशक : **स्वाक्षर प्रकाशन**
103, मनोकामना भवन, गली न-2, कैलाशपुरी
पालम, नई दिल्ली-110045 (भारत)
दूरभाष - 08826123590, 9711950086
ई-मेल : vaadsamvaad@gmail.com

शाखा कार्यालय : **स्वाक्षर प्रकाशक एवं वितरक**
न्यू ऑफिसर कॉलोनी
बुद्धचक, बरमसिया (शिवलोचन मंदिर के निकट)
जिला-कटिहार, बिहार-854105

मूल्य : 825.00
प्रथम संस्करण : 2021
शब्दांकन : स्वाक्षर ग्राफिक्स
मुद्रक : एस. सी. स्कैन, नई दिल्ली-110002

SAMAJIK KRANTI KE AGRADUT : GURU GHASIDAS
BY
Ed. Dr. RAJARAM BANARJI/ AVINASH BANARJI

Scanned with CamScanner

गुरुघासीदास के मूलभूत सिद्धांतों का अनुशीलन

✍ डॉ. श्रीमती धनेश्वरी दुबे

प्रस्तावना

गुरुघासीदास बाबा एक महान धार्मिक संत एवं समाज सुधारक थे। उनका जीवन छत्तीसगढ़ की धरती के लिए ही नहीं, अपितु समूची मानव–जाति के लिए कल्याण का प्रेरक संदेश देता है। सतनाम धर्म के प्रवर्तक छत्तीसगढ़ के यह महान पुरूष एक सिद्ध पुरूष होने के साथ–साथ अपनी अलौकिक शक्तियों एवं महा मानवीय गुणों के कारण श्रद्धा से पूजे जाते हैं।

18 वीं सदी के उतरार्द्ध और 19 वीं सदी के पूवार्द्ध में छत्तीसगढ़ के लोगों के सामाजिक और आर्थिक उन्नति के लिये यदि किसी महापुरूष का योगदान रहा है तो सतनाम के अग्रदूत समता के संदेशवाहक और क्रांतिकारी सद्गुरु घासीदास है। तत्कालीन समय में छत्तीसगढ़ के दलित, शोषित पीड़ित समझे जाने वाले लोगों का जीवन बड़ा ही दुखमय था। मानव–मानव में छुआ–छूत, अवर्ण–सवर्ण, उंच–नीच का भेदभाव व्याप्त था। मंदिरों में धर्म–कर्म के नाम पर नरबलि और पशुबलि की परम्परा प्रचलित थी। मंदिर और मठ अनाचार का केन्द्र बने हुये थे। नारी जाति के प्रति शोषण का भाव मंदिरों में भी देखने को मिलता था। तंत्र–मंत्र, टोनही, बैगा, पंगहा आदि अंधविश्वास के नाम पर लोगों को ठगा जा रहा था। धार्मिक साधना का रूप काफी विकृत था। धामिकता की आड़ में लोग मांस और मंदिरा का सेवन कर रहे थे। जनता छोटे राजाओं, पिंडारियों, सूबेदारों के लूट और आतंक से त्राहि–त्राहि कर रही थी। लगान और

• विभागाध्यक्ष, हिन्दी, शासकीय इं.वि. स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोरबा छ.ग.

Scanned with CamScanner

महान चिंतक और राष्ट्रनिर्माता
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

"मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व सिखाता हो।"

डॉ. राजाराम बनर्जी
अविनाश बनर्जी

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

शुभकामना	(v)
चंद शब्द मेरे भी...	(vii)
वैचारिक क्रान्ति के अग्रदूत-डॉ अम्बेडकर ✍ डॉ. बहुरन सिंह पटेल	1
सामाजिक क्रांति के अग्रदूत : डॉ. भीमराव अम्बेडकर ✍ अमृत लाल चन्द्रभाष	8
Dr. Babasaheb Ambedkar's Vision of Equality in Indian Society ✍ *Dr. Rajiv N. Aherkar*	17
कार्ल मार्क्स व अम्बेडकर दर्शन ✍ दासरी श्रीधर	24
डॉ. अम्बेडकर और नारीवाद ✍ श्री हरीश कुमार देवे	28
राष्ट्र निर्माण के परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव आंबेडकर का योगदान ✍ डॉ. श्रीमति धनेश्वरी दुबे,	39
डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर : आणि त्यांचा धम्म ✍ प्रा. प्रकाश संभाजी वाघमारे	45
आधुनिक भारत के निर्माता : डॉ. भीमराव अम्बेडकर ✍ डॉ. श्रीमती अंजू शुक्ला	52
राष्ट्रीय एकता के पुरोधा-डॉ. अंबेडकर ✍ डॉ. के. पद्मा रानी	57
वर्तमान सन्दर्भ में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता ✍ डॉ. प्रीति मौर्या	62
नारियों के मुक्तिदाता डॉ. अम्बेडकर ✍ प्रा. डॉ. मालती घोंडोपंत शिंद	69
डॉ. अम्बेडकर और उनका मानववाद ✍ डॉ. शैलप्रभा कोष्टा	74

Scanned with CamScanner

राष्ट्र निर्माण के परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव आंबेडकर का योगदान

✍ *डॉ. श्रीमति धनेश्वरी दुबे,*

प्रस्तावना– डॉ. भीमराव आंबेडकर का जीवन राष्ट्र निर्माण और दीन–दीनों की सेवा के लिए समर्पित था। उनके सामने जहाँ एक तरफ दुखी–पीड़ित लोगों के अधिकारों की रक्षा प्रश्न था, वहीं दूसरी ओर राष्ट्र हित का सतत् संवर्धन भी था। डॉ. आंबेडकर का व्यक्तित्व सिर्फ दलितों तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उनका योगदान समुचे भारत के लिए था। वे पूरे भारत के नेता थे। उन्होंने सभी वर्ग के लोगों के हित में काम किया।

राष्ट्र निमार्ण के परिप्रेक्ष्य में डॉ. आंबेडकर का योगदान– डॉ. आंबेडकर ने राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है–

1. सामाजिक क्षेत्र में योगदानः–आंबेडकर का सम्पूर्ण जीवन भारतीय समाज में सुधार के लिए समर्पित था। अस्पृश्यों तथा दलितों के वे मसीहा थे। उन्होंने सदियों से पददलित वर्ग को सम्मानपूर्वक जीने के लिए एक सुस्पष्ट मार्ग दिया। उन्हें अपने विरुद्ध होने वाले अत्याचारों, शोषण, अन्याय तथा अपमान से संघर्ष करने की शक्ति दी। उनके अनुसार सामाजिक प्रताड़ना राज्य द्वारा दिए जाने वाले दण्ड से भी कहीं अधिक दुखदाई है। डॉ. आंबेडकर ने समाज सुधार के क्षेत्र में निम्नलिखित प्रयास कियेः–

क. वर्ण व्यवस्था का विरोध– भारतीय आर्यो के सामाजिक संगठन का आधार चतुवर्ण व्यवस्था रहा है। इस आधार पर समाज को अपने कार्य के आधार पर चार भागों में विभाजित कर संकीर्ण और गरिमाहीन

• विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, शा. ई. वि. स्नात. महा. कोरबा छत्तीसगढ़

Scanned with CamScanner